1. प्रश्न: रीतिकाल के लोकप्रिय कवि बिहारी के जीवन-वृत्त का उल्लेख करते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

अथवा

रीतिकाव्य में बिहारी का शृंगार-वर्णन सर्वोपरि है, उनकी 'सतसई' के आधार पर इस बात की पुष्टि कीजिए।

अथवा

रीतिसिद्ध काव्य की विशेषताओं या प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर: जीवन-वृत्त:-

बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। 'बिहारी-सतसई' पर लिखी गई अनेक टीकाएँ उनकी लोकप्रियता का प्रमाण हैं, परन्तु लोकप्रियता की ओट में बिहारी का जीवन-वृत्त आच्छादित हो गया है ऐसा प्रतीत होता है कि उनके सरस दोहे पढ़कर जनता उन्हें विस्मृत कर बैठी है।

जगन्नाथदास रत्नाकर ने बिहारी का जन्म सं० 1652 माना है। अधिकतर विद्वान् इसे ही बिहारी का जन्म सम्वत् स्वीकार करते हैं। बिहारी के जन्म-स्थान, कुल और प्रारम्भिक जीवन के विषय में दो दोहे प्रसिद्ध हैं-

"जन्म लियो द्विजराज कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।
मेटे हरो कलेस सब, केसव, केसवराइ।।
जन्म ग्वालियर जानिए, खण्ड बुन्देले बाल।
तरुनाई आई सुघर मथुरा बसि ससुराल।।" इन

दोहों से बिहारी के जीवन के विषय में कुछ तथ्य स्पष्ट हैं-

1. बिहारी के पिता का नाम केशवराय था। कुछ विद्वान प्रसिद्ध आचार्य कवि केशवदास को ही उनका

पिता मानते हैं, परन्तु बिहारी और केशवदास में पिता-पुत्र का सम्बन्ध निर्विवाद नहीं।
2. वे जाति के ब्राह्मण थे।
3. वे कहीं से आकर ब्रज में बस गए थे।
4. बिहारी का जन्म ग्वालियर में हुआ था।
5. बुन्देलखण्ड में उनका बाल्यकाल बीता और यौवनावस्था में विवाहोपरांत वे मथुरा में अपनी ससुराल में रहे।

बिहारी शाहजहाँ के कृपापात्र थे और जयपुर के राजा महाराजा जयसिंह के राजदरबार में रहते थे। इन्हीं के दरबार में उन्होंने 'सतसई' की रचना की थी। बिहारी का देहावसान सं०-1720 के आस-पास हुआ।

कृतित्व :

महाकवि बिहारी ने केवल एक ही रचना की थी- 'बिहारी-सतसई'। इस एक रचना से ही वे इतने प्रसिद्ध हो गए कि 'पीयूषवर्षी मेघ' बन गए और सूर, तुलसी तथा केशव को भी आच्छादित करने लगे। 'बिहारी-सतसई' सतसई परम्परा का गौरव है। मुक्तक-काव्य की प्रायः सभी विशेषताएँ इस रचना में प्राप्त होती हैं। 'सतसई' के विषय में प्रसिद्ध है।—

"सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन को छोटे लगैं, घाव करें गम्भीर ॥"

इसी प्रकार यह एक ही ग्रन्थ 'बिहारी-सतसई' कविवर बिहारी की कीर्ति का आधार-स्तम्भ है। आचार्य शुक्ल का इस सम्बन्ध में कथन है-
"यह बात साहित्य के क्षेत्र में इस तथ्य की स्पष्ट घोषणा कर रही है कि किसी कवि का यश उसकी रचनाओं के परिमाण से नहीं होता, गुण के हिसाब से होता है।"

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो०नं० - 7909046087
दिनांक - 27.01.2022